Aggression & social violence.

Aggression का अर्थ है किसी व्यक्ति जानबूझकर दूसरे व्यक्ति को नुकसान पहुँचाने वाला व्यवहार है। इसमें शारीरिक रूप से, मौखिक रूप से या मनोवैज्ञानिक रूप से हमला करना शामिल है। इसमें अक्सर व्यक्ति गुस्सा, ईर्ष्या या प्रतिशोध की भावना शामिल होती है, और ये किसी एक व्यक्ति या समूह द्वारा किया जाता है। वहीं

Social violence :- (सामाजिक हिंसा) :- सामाजिक हिंसा का मतलब है बड़े पैमाने पर समाज में होने वाली हिंसा जैसे :- दंगों, जातिगत संघर्ष या सामूहिक हिंसा आदि, जो अक्सर समूहों के बीच संघर्ष और असमानता से जुड़ी होती है। जैसे :- राजनीतिक उथल-पुथल धार्मिक हिंसा या आर्थिक असमानता से जुड़े संघर्ष आदि।

ये हिंसा अक्सर लंबे समय तक चलती है और समाज में डर या अस्थिरता का माहौल पैदा कर देती है।

... का अर्थ (Meaning of Aggression & viola...

आक्रमण तथा हिंसा एक सार्वभौमिक समस्या (Universal Problem) है। यह समस्या भारतीय समाज के साथ-2 दूसरे सभी देशों में गंभीर तथा जटिल समस्या बनते जा रही है। आरनोल्डबास (Arnold Buss) 1961 के अनुसार - "आक्रमण का अर्थ वह व्यवहार है, जिससे दूसरे को नुकसान या कष्ट पहुँचता है।" दूसरे शब्दों में "Aggression is any behaviour that harms or hurts some one else." बरकोविज (Barkowitz, 1975 ने भी कहा है कि "आक्रमण का तात्पर्य दूसरों के प्रति किये गए साभिप्राय क्षति या हानि से है।" दूसरे शब्दों में "Aggression refers to injury or harm to another person" Chaplin (1975) ने आक्रमण की परिचालक परिभाषा (operational definition) पर बल दिया है और कहा है कि "आक्रमण का तात्पर्य दूसरों के प्रति प्रहार करना या क्षति पहुँचाना, अनादर, नुकसान पहुँचाना, उपहास या आरोप करना, दंड देना परपीड़क व्यवहारों में लगा रहना है।" दूसरे शब्दों में "Aggression means the need to assault or injure another, to belittle, harm, ridicule, or accuse maliciously, to punish severely, or to engage in sadistic practice." इस विचार का समर्थन करते हुए Reber & Reber (2001) ने कहा है कि "आक्रमण एक अत्यधिक सामान्य पद है, जिसका व्यवहार विभिन्न ऐसे व्यवहारों के लिए किया जाता है, जिनमें धावा, वैराग्य, आदि निहित होते हैं।" (*)

कूपर तथा वरशेल (1979) ने आक्रमण को परिभाषित करते हुए कहा है कि "किसी लक्ष्य विशेष के प्रति हानि पहुँचाने के उद्देश्य किए गए व्यवहारों को आक्रमण कहते हैं।"

(*) दूसरे शब्दों में "Aggression is an extremly genral term used for a wide variety of acts that involve attack, hostility, etc."

Robert & Donn Byrne (रॉबर्ट तथा डॉन बिर्ने), 1974 ने कहा कि "दूसरे प्राणी को नुकसान या क्षति पहुँचाने के उद्देश्य से किया गया कोई भी व्यवहार आक्रमण है, जिससे बचने के लिए वह प्राणी इच्छुक हो।" दूसरे शब्दों में "Aggression is any form of behaviour directed toward the goal of harming or injuring another living being who is motivated to avoid such treatment."

विभिन्न आक्रमण के सम्बन्ध में भिन्न-भिन्न मनोवैज्ञानिकों के द्वारा दिए गए परिभाषाओं में कई समानता पाई जाती है। अतः उनके विश्लेषण से आक्रमण के सम्बन्ध में चार बातें स्पष्ट होती हैं :—

(i) आक्रमण एक व्यवहार है। इस अर्थ में आक्रमण संवेग (emotion) या आवश्यकता (need) से भिन्न है। संवेग के साथ आक्रमण हो भी सकता है और नहीं भी हो सकता है। प्रेरक (motive) या आवश्यकता का सम्बन्ध आक्रमण के साथ हो भी सकता और नहीं भी। अतः इस आक्रमण को न तो संवेग कह सकते हैं, न प्रेरक और न आवश्यकता।

(ii) आक्रमण वह व्यवहार है, जो जानबूझकर दूसरों को चोट, क्षति या नुकसान पहुँचाने के उद्देश्य से किया जाता है। आक्रमण व्यवहार का यह अभिप्राय कभी तो प्रकट (explicit) होता है और कभी अप्रकट (implicit)।

(iii) आक्रमण जीव या प्राणी की ओर निर्देशित होता है। यदि दीवार, कुर्सी, टेबुल या किसी अन्य निर्जीव वस्तु के साथ ऐसा व्यवहार किया जाए तो उसे आक्रमण नहीं कहेंगे। हाँ यदि जानबूझकर किसी ऐसी वस्तु को नष्ट कर दिया जाए जिससे किसी व्यक्ति या जीव को नुकसान पहुँचे तो इसे

आक्रमण कहेंगे। जैसे :- यदि किसी बच्चे के सुन्दर खिलौनों को इस इस अभिप्राय से तोड़ दें कि उसे नुकसान हो या वह पीड़ा का अनुभव कर सके और सचमुच उस बच्चे को पीड़ा या कष्ट का अनुभव हो तो इस व्यवहार को आक्रमण कहा जायेगा।

(iv) आक्रमण में पीड़ित (victim) उससे बचने के लिए प्रेरित होता है। यदि पीड़ित आक्रमण से बचने की प्रेरणा नहीं रखता हो तो, इसे आक्रमण नहीं कहा जाएगा। जैसे :- स्वपीड़क (masochist) खुद से या अपने प्रेमियों के हाथ से पीड़ा पाते समय उससे बचने की प्रेरणा नहीं रखते हैं। इसी कारण अतः ऐसे व्यवहारों को आक्रमण नहीं कहेंगे, क्योंकि यहाँ पीड़ित में ऐसे व्यवहारों से बचने की प्रेरणा का अभाव होता है।

स्पष्ट है कि केवल ऐसे व्यवहारों को आक्रमण कहेंगे, जिसमें उक्त चारों विशेषताएँ उपस्थित हैं।

— o —